3641/P

B.A. (III Year) (Private) Examination, 2018

SANSKRIT

Paper–I

(वैदिक व लौकिक काव्य एवं गद्य)

Time allowed : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

इकाई-I

(i) इन्द्र सूक्त के ऋषि एवं सूक्त में प्रयुक्त छंद का नाम बताइये।

(ii) वाक् सूक्त के ऋषि व उसमें प्रयुक्त छंद का नाम बताइये।

इकाई-II

(iii) नचिकेता के पिता ने दान में कैसी गायें दी थी?

(iv) नचिकेता ने यम से कितने वर माँगे और द्वितीय वर में क्या माँगा?

इकाई-III

(v) युधिष्ठिर ने गुप्तचर किसे व किस रूप में भेजा था?

(vi) 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्ति किसने और किससे कहीं?

इकाई-IV

(vii) वनवास में नकुल व सहदेव की स्थिति कैसी हो गयी थी?

(viii) द्रौपदी ने युधिष्ठिर को राजनीति में किस अविवेकी पुरुष के परास्त होने की बात कही है।

इकाई-V

(ix) चन्द्रापीड़ के पिता का क्या नाम था?

(x) गुरु का उपदेश अशिष्ट के कान में पड़कर किस तरह पीड़ा पहुँचाता है?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिये :

(क) यः पृथिवी व्यथमानामदंहद्

यः पर्वतान् प्रकुपितां अरम्णात्।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो

यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः।।

(ख) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।

य 3 त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा।।

(ग) येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृल्हा येन स्वः स्तम्भितं येन नाकः।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।

(घ) सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

इकाई- II

3. निम्नलिखित मंत्रों में से किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या कीजिए :

(क) आशाप्रतीक्षे संगतं सूनृतां

नेष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।

एतद् वृङ्क्ते पुरुष स्याल्पमेधसो

यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे।।

(ख) स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति,

न तत्र त्वं, न जरया बिभेति।

उभे तीर्त्वा अशनाया पिपासे

शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(ग) दूरमेते विपरीते विषूची, अविद्या या च विद्येति ज्ञाता।

विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये न त्वा कामा बहवो अलोलुपन्त।।

(घ) अणोरणीयान्महतो महीयान्,

आत्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।

तमक्रतुः पश्यति वीतशोको

धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः।।

इकाई III

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्नयः संशृणुतेस किंप्रभु

यदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वभीक्ष्णमपु च सर्वसंपदा।।

अथवा

तथाऽपि जिह्मः स भवज्जिगीषयातनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।

समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।।

इकाई IV

5. निम्नलिखित पद्य की **संस्कृत** में व्याख्या कीजिये :

(क) अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्तिवश्याः स्वयमेव देहिनः।

अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः।।

अथवा

(ख) विहाय शान्तिं नृप! धाम तत्पुनः प्रसीद संधेहिवधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूयं निस्पृहा शमेन सिद्धि मुनयो न भूभृतः।।

इकाई-V

6. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) गर्भेश्वरत्व-ममिनवयौवनत्व-मप्रतिमरूपत्वममानुष-शक्तित्व-ञ्चेति महतीयं रवल्वनर्थपरम्परा सर्वा। अविनयानामेकैक-मप्येषाभायतनम् किमुत समवायः। यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालन-निर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्लिक्त धवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरति दूरभात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः।

अथवा

(ख) गन्धर्वलेखेव पश्यत एव नश्चति। अद्यप्यारूढ मन्दरपरिवतविर्त भ्रान्ति जनितसंस्कारेव परिभ्रमति। कमलिनी-संचरणव्यतिकर-लग्ननलिननाल-कष्टकक्षते व न क्वचिदपि निर्भर-माबधनाति पदम्। अति प्रयत्नविधृतापि परमेश्वर गृहेषु विविधगन्धगज गण्डमधुपानमत्तेव परिस्खलति। पारुष्यमिगेयशिक्षितुभसि धारासु निवसति। विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्तिम्। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूलदण्डकोशभण्डलमपि मुञ्चतिभूभुजम्।

खण्ड-स

इकाई-I

7. 'प्रजापतिसूक्त' का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

इकाई-II

8. कठोपनिषद् की द्वितीय वल्ली के आधार पर विद्या व अविद्या का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

इकाई-III

9. 'भारवेरर्थगौरवम्' पर एक लेख लिखिये।

इकाई-IV

10. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग का सारांश लिखिये।

इकाई-V

11. 'शुकनासोपदेश' के आधार पर लक्ष्मी के स्वरूप पर एक लेख लिखिये।